प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403
Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव

खाते पीते मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है वर्षीतप : आचार्य महाश्रमण

सरदारषहर 16 मई।

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव यहां के ताल मैदान में आयोजित हुआ। इस भव्य महोत्सव में देश के अनेक प्रातों से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि शारीरिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से उपवास का महत्व है। उपवास से इन्द्रियों के निग्रह की साधना होती है। वर्षीतप भी उपवास की साधना है। यह खाते पीते मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है।

उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ ने मानव सभ्यता के प्रारंभ में बड़ी सेवाएं दी। एक शिक्षक के रूप में लोगों को सारी गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया। अक्षय तृतीया लौकिक दृष्टि में महत्वपूर्ण त्यौहार है। उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ के सामने आध्यात्मिक लक्ष्य होने के बावजुद लौकिक कर्तव्यों को नजर अंदाज नहीं किया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि भगवान ऋषभ धर्म एवं कर्मयुग के प्रथम प्रवर्तक थे। इससे पहले सीधी–साधी जीवन शैली थी। लोगों की इच्छाएं कल्पवृक्षों के द्वारा पूर्ण होती थी। जब समय बदला, इच्छाएं बढी तब भगवान ऋषभ प्रथम राजा के रूप में स्वीकार किये गये। उन्होंने अषि, मषि, कृषि का प्रशिक्षण देकर मानव जाति का उपकार किया। इस दृष्टि से वे सामाजिक क्रांति के प्रथम सूत्रधार थे। उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ को 1 वर्ष 40 दिन तक आहार पानी न मिलने के कारण हुई तपस्या के उपलक्ष में वर्तमान में वर्षीतप किया जाता है। तेरापंथ में इसको व्यापकता 19 अप्रैल, 1969 में मिली। उस दिन बाद यह महोत्सव बड़े स्तर पर मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि वर्षीतप आत्म शोधन का मार्ग है। वर्षीतप करने वाले भाई बहिन देखें कि उनके जीवन में कितना बदलाव आया है। इसका विश्लेषण करें।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि अक्षय तृतीया का लौकिक और अलौकिक दोनों दृष्टियों से महत्व है। वर्षीतप करने वाले केवल बाह्य तप पर ही ध्यान न दें साथ ही आन्तरिक तप को भी जोड़ें जिससे कषाय का उपशमन होगा और आत्मसाक्षात्कार की तरफ कदमों को गतिशील कर सकेंगे। इस मौके पर 14वां वर्षीतप सम्पन्न करने वाले मुनि राजकुमार ने गीत की प्रस्तुति दी। छठा वर्षीतप करने वाली साध्वी गुप्ति प्रभा और प्रथम वर्षीतप करने वाली साध्वी गौरवप्रभा ने अपने विचार रखे। समणी शीलप्रज्ञा ने 8वें वर्षीतप पर श्रद्धा व्यक्त की। 'भक्ति का थाल सजाएं' गीत से तेरापंथ महिला मण्डल एवं तेरापंथ कन्या मण्डल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमल कुमार नाहटा ने स्वागत भाषण दिया। समिति के संयोजक सुमतिचन्द गोठी ने अपने विचार रखे। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रथम पारणा महोत्सव मिलने को सरदारशहर वासियों का सौभाग्य बताया। समिति के मंत्री रतन दुगड़, गांधी विद्या मंदिर के कुलपति मिलाप दुगड़ आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

इक्षुरस का दान देकर किया पारणा

एक वर्ष से एक दिन उपवास और दूसरे दिन आहार ग्रहण की तपस्या करने वाले भाई बहिनों ने अपने वर्षीतप का पारणा आचार्य महाश्रमण को इक्षुरस का दान देकर किया। भगवान ऋषभ ने भी अपनी 1 साल 40 दिनों की तपस्या का पारणा प्रपौत्र श्रेयांस के द्वारा भिक्षा में मिले इक्षुरस के द्वारा ही किया था। वर्तमान में वर्षीतप करने वालों के द्वारा अपने आराध्य को ईक्षु रस का दान दिया जाता है। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 103 भाई बहिनों 5 साधु–साध्वियों एवं एक समणी ने वर्षीतप का पारणा किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)

संलग्न फोटो : अक्षय तृतीया महोत्सव